

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र आवाज...

डाक पंजीयन- दुर्ग/1743290201/2025-27

कांग्रेस, शिवजी की बारात नहीं, अराजकता फैलाने वाले हुड़दंगियों की जमात है : शिवराज

लगातार राजनीतिक चुनौतियों से जूझ रही है। चुनाव में हारने के बाद आंदोलन के जरिए अपनी खोड़ी निकालना उसकी नियति बन गई है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस को समझना चाहिए कि जनता उसे क्यों नकार रही है। 'नाच न जाने, आंगन टेढ़ा' की तर्ज पर कांग्रेस अपनी गलतियों को सुधारने के बजाय चुनाव आयोजन को दोष दे रही है। पार्टी की अंदरूनी कहानि, नेतृत्व का संकट और दिशाहीन राजनीति उसकी सबसे बड़ी समस्या है।

केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस के आंदोलनों पर टीका हमला बोलेते हुए कहा कि देश की परंपराओं, आस्थाओं और जीवन मूल्यों से कांग्रेस नेतृत्व को कोई जुड़ाव दिखाई नहीं देता।

एक दिन लगे या दो साल, पीछे नहीं हटेंगे आंदोलन जारी रहेगा : राहुल गांधी

रहेगी। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने मौलानावर को अपने आवास पर इंडिया गार्डन के तलाओं को चाय पर बुलाने के दौरान आगे के आंदोलन की रणनीति पर विचार-विमर्श के बाद कहा कि उनका आंदोलन जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि उनका आंदोलन रुकने वाला नहीं है।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और एसआरजे की प्रक्रिया को खत्म करने की अपनी मांग पर उन्होंने कहा कि मांग पूरी होने तक वह रुकेगी नहीं। उनकी मांगें पूरी होने में चाहे कल, परसों, तीन महीने, छह महीने, एक साल या दो साल लग जाएं, संघर्ष जारी रहेगा।

बिम्सटेक देशों ने दिल्ली घोषणा पत्र में आतंकवाद नशे और मानव तस्करी से निपटने पर जताई सहमति

गंगा की खाड़ी बहुक्षेत्रीय तकनीकी और
गंगा पहल (बिम्स्टेक) देशों के गृह मंत्रियों ने
नशीले पदार्थों की
व्यवसायिक तस्करी, साइबर
अवैध वित्तीय लेन-
देन के लिए आपसी
सहकार करने पर सहमति
प्राप्त की। गृह मंत्री अमित
शाह ने बिम्स्टेक के
पहली बैठक हुई।
देशों ने बैटुक में सुरक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए
भी अपनाया गया। बैठक में बंगलादेश, भूटान,
मालदीव, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड
ने हिस्सा लिया। अमित शाह ने कहा कि
यह एकता, आर्थिक सहयोग और सामूहिक सुरक्षा
का मंच बन गया है। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ
गठित 'द टॉलरेंस' की नीति दोहराते हुए सदस्य देशों से
गंगा की सुरक्षा करने, वित्तीय जांच, कानूनी सहायता
आदि के प्रत्यर्पण में सहयोग बढ़ाने का आह्वान
किया। गंगा पहल (बिम्स्टेक) देशों के गृह मंत्रियों
ने नियंत्रण की कार्ययोजना और मनी लॉन्ड्रिंग
की वित्तपोषण से निपटने के लिए क्षमता निर्माण
का प्रारंभ किया।

किसानों का पैसा हजम कर गए सपाईं उसी का श्राप ले डूबा : मुख्यमंत्री योगी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी ने आदिवासीयों को आपदा राहत वितरण को लेकर पिछली सरकारों की तीखा प्रहार करते हुए कहा कि किसानों का पैसा हमम करने वाला सपाइयों को उन्हीं का श्राप ले डूबा वर्ष 2014 में हुदहुद चक्रवातों दौरान केंद्र सरकार ने 3200 करोड़ रुपये भेजे थे, लेकिन तत्कालीन सपा सरकार किसानों को महाम 800 करोड़ रुपये ही बांट सकी शेष धनराशि किसानों तक न पहुंची। वर्ष 2017 में सरकार बजट के बाद इसकी पड़ताल करीब अलग से धनराशि की व्यवस्था किसानों को बकाया मुआवजा दिलाया। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि सपाईं जाति के नाम पर समाज को बांटते रहे, लेकिन किसानों खून-पसीने की कमाई पर डकैत डालने से भी नहीं चूके। किसान का पैसा हमम करने वालों का श्राप ले डूबा। सोमवार को

योगिराज बाबा गंधीरनाथ प्रेक्षागृह एवं सांस्कृतिक केंद्र में मुख्यमंत्री द्वारा योगी ने बाढ़, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि और चक्रवात से प्रभावित प्रदेशों के 9,18,091 किसानों के खातों में 493 करोड़ रुपये की कृषि निवेश अनुदान हस्तांतरित किए। उन्होंने कहा कि डबल इंजन सरकार ने महज आठ से दस दिन में किसानों को मुआवजा उपलब्ध कराया है। इस वर्ष बरसात के दौरान आपदा प्रभावित किसानों और नागरिकों के करीब एक हजार करोड़ रुपये की सहायता दी जा चुकी है।

सरकार का बड़ा फैसला, अवैध प्लैटों की रजिस्ट्री पर आज से रोक

ए नदिशाँ के मुताबिक, निर्माण के विरुद्ध बने पलैतों की पहली बिच्री के एपीमें, खरीद-बिक्री के दस्तावेज, डोडक अपर अपार्टमेंट और ट्रांसफर डोड की रजिस्ट्री नहीं की जाएगी। इसके अलावा, जिन इमारतों में मंजूर नक्शे में तय क्षेत्रफल से अधिक निर्माण किया गया है, उन पलैतों की रजिस्ट्री पर भी रोक रहेगें। राजस्व मंत्री की अध्यक्षता में 22 सितंबर 2026 को हुइ बैठक में यह बात सामने आई थी कि राज्य के कुछ हिस्सों में बिना सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के ही निर्माण परियोजनाएँ बनकर उभरीं पलैत बेचे जा रहे हैं। साथ ही मंजूरी नक्शे से ज्यादा एरिया वाले पलैत भी बेचे जा रहे हैं।

एससी-एसटी कोटा बढ़ाने वाला कानून रद्द

के कई फैसलों में भी लगातार बरकरार रखा गया है। कर्नाटक सरकार के इस कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं में भी इसी कानूनी नज़ीर को आधार बनाया गया था। तत्कालीन मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई की भालापा सरकार में कार्यकाल में पारित इस कानून के जरिए अनुसूचित जाति का आरक्षण 15 से बढ़ाकर 17 प्रतिशत और अनुसूचित जनजाति का आरक्षण 3 से बढ़ाकर 7 प्रतिशत किया गया था।

रायपुर। मुख्य सचिव विकासशील ने सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण को प्राथमिकता देते हुए सभी विभागों को जिम्मेदारी के साथ कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए कहा। मुख्य सचिव की अध्यक्षता में आज यहां मंत्रालय महानदी भवन में राज्य स्तरीय उच्चाधिकारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए आवश्यक निर्देश दिए गए। मुख्य सचिव विकासशील ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन में अब राज्य में लगभग दो लाख शिकायतें दर्ज की जा चुकी हैं। उन्होंने विभागों को शिकायतों की गंभीरता



समीक्षा करने तथा समस्याओं का वास्तविक स्वरूप जानने के लिए आवश्यकता अनुसार भौतिक सत्यापन करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शिकायतों का निराकरण केवल औपचारिकता तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि संबंधित नागरिकों की समस्याओं का वास्तविक समाधान सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को शिकायतों की नियमित मॉनिटरिंग करने और निराकरण की गुणवत्ता में सुधार लाने पर विशेष ध्यान देने को कहा।

बैठक में आगामी धान खरीदी के लिए नीति तैयार करने तथा जल जीवन मिशन से संबंधित नीति के शेष बिंदुओं को समय पर पूरा करने से संबंध में चर्चा की गई। मुख्य सचिव ने संबंधित विभागों को सभी आवश्यक बिंदुओं की समीक्षा करना कर्मियों को दूर करने तथा कार्ययोजना को व्यवस्थित रूप से अंतिम रूप देने के निर्देश दिए। उन्होंने जल उपयोगिता से जुड़े विषयों पर भी विशेष ध्यान देने को कहा। बैठक में डिजिटल क्रॉप सर्वे की समीक्षा करने तथा संबंधित विषयों पर आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए।

संपादकीय

वैश्विक जलप्रबंधन के क्षेत्र में भारत का प्रभाव काफी बढ़ा है। वह कभी एक ऐसा देश था, जिसे बार-बार जलवायु संकट के झटकों का सामना करना पड़ता था, जहां पानी तक पहुंच एक बड़ी चुनौती थी।हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित 'भारत अंतरराष्ट्रीय जल सप्ताह' के नौवें संस्करण का केंद्रीय विषय जलवायु-अनुकूल जल प्रबंधन था। इस दौरान चर्चा में दो बातों पर जोर दिया गया कि भारत ने पिछले एक दशक में क्या हासिल

किया है और उससे आगे क्या करना है। आगे की राह का मतलब पानी की आपूर्ति को सतत बनाए रखना, पानी का अधिक कुशलता से उपयोग करना, और इस्तेमाल हो चुके पानी यानी प्रयुक्त जल को पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के लिए एक संसाधन की तरह देखना है। वैश्विक जलप्रबंधन के क्षेत्र में भारत का प्रभाव काफी बढ़ा है। वह कभी एक ऐसा देश था, जिसे बार-बार जलवायु संकट के झटकों का सामना करना पड़ता था,

जहां पानी तक पहुंच एक बड़ी चुनौती थी। मगर आज वह बाढ़ और सूखे जैसी चरम जलवायु घटनाओं से निपटने में अधिक सक्षम है। भारतीय अनुभव में वैश्विक दक्षिण के दूसरे देशों के लिए सीख मौजूद है कि कैसे जल सुरक्षा की दिशा में बड़े कदम उठाए जा सकते हैं।पिछले करीब एक दशक में भारत ने जल प्रबंधन को लेकर दुनिया के कुछ सबसे बड़े कार्यक्रमों को बनाया और लागू किया है। इनका मकसद जल प्रबंधन

को बेहतर बनाना, नदियों को पुनर्जीवित करना, पानी एवं स्वच्छता के उपायों तक पहुंच बढ़ाना और सामुदायिक अगुवाई में पानी को बचाना, सुरक्षित रखना और उसकी उपलब्धता बढ़ाने वाले कार्यों को सक्षम एवं प्रभावी बनाना है। अगर पीछे मुड़कर देखें, तो इसमें वर्ष 2001 से 2014 के बीच गुजरात में जल प्रबंधन से जुड़ी पहलें महत्वपूर्ण रही हैं। यह दौर उन जल प्रबंधन सुधारों को एक प्रयोगशाला जैसा था, जिन्हें वर्ष 2014 के

बाद पूरे देश में लागू किया गया। इसमें स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन, जल शक्ति अभियान, नमामि गंगे, अटल भूजल योजना और प्रति बूंद अधिक फसल जैसे बड़े जल कार्यक्रमों का कार्यान्वयन शामिल है।पच्चीस साल के इस सफर को एक नए अध्ययन 'फ़ाम गुजरात टू इंडिया'-वाटर लेसंस फार द वर्ल्ड' में दर्ज किया गया है। यह वर्ष 2001 से 2026 तक गुजरात और भारत के जल प्रबंधन सुधारों का क्रमवार ब्योरा देती है। यह

अध्ययन आधिकारिक आंकड़ों, नीति, कार्यक्रमों के दस्तावेजों, शोधों और इस क्षेत्र में काम करने वालों लोगों से बातचीत पर आधारित है। इसमें प्रमुखता से यह तथ्य सामने आया है कि कैसे व्यापक स्तर पर जल सुरक्षा को मजबूत करने के लिए राजनीतिक नेतृत्व एवं प्राथमिकता, सार्वजनिक वित्तपोषण, संस्थागत सुधार, प्रशासनिक अमल और सामुदायिक भागीदारी ने एकजुट होकर काम किया है।

सेवा के 25 साल... गुजरात मॉडल से विकसित भारत के ड्रीम तक, मोदी का संकल्प

(कुबूल अहमद)
प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सत्ता में 25 साल का सफर पूरा कर लिया है, जिसे भाजपा ने 'जनसेवा' का नाम दिया है. नरेंद्र मोदी ने 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर पहली बार सत्ता की बागडोर संभाली थी. 13 साल मुख्यमंत्री रहने के बाद वह पिछले 12 वर्षों से देश के प्रधानमंत्री के तौर पर काम कर रहे हैं. तब से लेकर आज तक भारतीय राजनीति में पीएम मोदी का सफर लगातार चर्चा के केंद्र में रहा है।

साल 2001 से 2014 तक गुजरात के मुख्यमंत्री और उसके बाद देश के प्रधानमंत्री के रूप में अपने 25 वर्षों के लंबे राजनीतिक कार्यकाल में उन्होंने कई ऐसे कठोर, साहसिक और दूरगामी फैसले लिए, जिनसे न केवल उनकी एक मजबूत नेता की छवि गढ़ी बल्कि देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दिशा को भी पूरी तरह बदल दिया।

मुख्यमंत्री के रूप में गुजरात से शुरू हुआ नरेंद्र मोदी के सत्ता का सफर प्रधानमंत्री पद तक पहुंच गया. गुजरात के सीएम रहते हुए आर्थिक विकास का उनका गुजरात मॉडल राज्य की कामयाबी में नई इबारत लिखने वाला रहा. प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने दुनिया भर में भारत की साख को और अधिक मजबूत किया है।

नरेंद्र मोदी ने कैसे बदली गुजरात की तस्वीर – गुजरात के भुज में जनवरी 2001 में आए विनाशकारी भूकंप के बाद तत्कालीन सीएम केशूभाई पटेल के गिरते स्वास्थ्य और राजनीतिक परिस्थितियों के बीच पार्टी में नए नेतृत्व की तलाश थी. दिल्ली में भाजपा के शीर्ष नेताओं अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी ने नरेंद्र मोदी को गुजरात की जिम्मेदारी देने का निर्णय किया. 7 अक्टूबर 2001 को उन्होंने गुजरात के 14वें सीएम के तौर पर शपथ ली।

गुजरात का मुख्यमंत्री बनते ही नरेंद्र मोदी के सामने 2001 के विनाशकारी भूकंप से राहत-पुनर्वास और उसके बाद 2002 के दंगों से राज्य को उबारने की चुनौती थी. उन्होंने गुजरात में निवेश लाने और औद्योगिक विकास को रफ्तार देने के लिए कई अहम कदम उठाए।

साल 2003 में नरेंद्र मोदी ने 'वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट' की शुरुआत की।इसके तहत नियमों को आसान बनाकर वैश्विक कंपनियों को गुजरात में आमंत्रित किया गया. टाटा नैनो प्लांट को पश्चिम बंगाल के सिंगूर से लाकर गुजरात के साणंद में स्थापित कराना उनके इसी आक्रामक विकास मॉडल का बड़ा उदाहरण बना।

24 घंटे बिजली सपनाई और जल संकट से निजात – साल 2003 में शुरू की गई ज्योतिग्राम योजना ने गुजरात के ग्रामीण



कर सरकारी अमले को सीधे किसानों के खेतों तक पहुंचाया गया, जिससे गुजरात की कृषि विकास दर दो अंकों में पहुंच गई।

प्रधानमंत्री के रूप में लिए गए ऐतिहासिक फैसले – गुजरात के विकास मॉडल और हिंदुत्व के प्रमुख चेहरे के रूप में उभरे नरेंद्र मोदी को भाजपा ने 2013 में पीएम पद का उम्मीदवार घोषित किया. 2014 में मोदी लहर के बलबूते भाजपा पहली बार अपने पूर्ण बहुमत के दम पर सत्ता में आई। भाजपा ने अकेले 282 सीटें हासिल कीं और 26 मई 2014 को नरेंद्र मोदी देश के 14वें प्रधानमंत्री बने. 2019 और फिर 2024 में जीत दर्ज कर उन्होंने लगातार तीसरी बार सरकार बनाई और जवाहरलाल नेहरू के बाद देश के पहले ऐसे प्रधानमंत्री बने जिन्होंने लगातार तीसरी बार यह पद संभाला।

प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने कई ऐतिहासिक कदम उठाए. अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा खत्म करना, तीन तलाक की समाप्ति, जनधन योजना, जीएसटी सुधार और आतंकी हमलों के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक तथा एयर स्ट्राइक जैसे कड़े कदम इनमें शामिल हैं।

जनधन खाता, नोटबंदी और जीएसटी का

इरादे से लिए गए इस फैसले ने तत्कालीन समय में भले ही असुविधा पैदा की, लेकिन इसने देश में डिजिटल लेनदेन की एक नई क्रांति की नींव रखी।

देश में लंबे समय से लंबित 'एक राष्ट्र, एक कर' की अवधारणा को साकार करते हुए पीएम मोदी के नेतृत्व में 1 जुलाई 2017 को जीएसटी लागू किया गया. देश के जटिल टैक्स ढांचे को सुव्यवस्थित करने और राज्यों के बीच व्यापारिक बाधाओं को दूर करने की दिशा में यह आजादी के बाद का सबसे बड़ा आर्थिक सुधार माना जाता है।

सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक – आतंकवाद के खिलाफ मोदी सरकार ने अपनी जीरो टॉलरेंस नीति के तहत सैन्य रणनीति को नया आयाम दिया. उरी आतंकी हमले (2016) के जवाब में भारतीय सेना ने 28-29 सितंबर 2016 की रात नियंत्रण रेखा पार कर पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी लॉन्च पैड्स पर सर्जिकल स्ट्राइक की. इसके बाद पुलवामा आतंकी हमले के जवाब में 26 फरवरी 2019 को भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के बालाकोट में एयर स्ट्राइक कर आतंकियों के ठिकानों को तबाह कर दिया।

इन फैसलों ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति को बदलकर रख दिया और दुनिया को यह स्पष्ट संदेश दिया कि भारत अब सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ केवल रक्षात्मक रहने के बजाय आक्रामक जवाब देने में पूरी तरह सक्षम है।

अनुच्छेद 370, राम मंदिर और सीएए का फैसला – मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल की शुरुआत में लिया गया यह अब तक का सबसे बड़ा और साहसिक राजनीतिक फैसला माना जाता है. 5 अगस्त 2019 को सरकार ने जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 के प्रमुख प्रावधानों को समाप्त कर दिया और राज्य को दो केंद्रशासित प्रदेशों (जम्मू-कश्मीर और लद्दाख) में विभाजित किया. इस फैसले ने घाटी की सियासत और सुरक्षा व्यवस्था का परिदृश्य बदल दिया, जिससे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का एक देश, एक विधान का संकल्प साकार हुआ।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद अयोध्या में भव्य राम मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होना और नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) लागू करना मोदी सरकार के वैचारिक एजेंडे के प्रमुख स्तंभ बने. जनवरी 2024 में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह ने देश के सांस्कृतिक और सामाजिक परिदृश्य पर अपनी छाप छोड़ी।

महिला आरक्षण और इंडब्ल्यूएस आरक्षण – मोदी सरकार ने संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने वाला नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कराया, जो तीन दशकों से लंबित था. इस फैसले ने भारतीय राजनीति में महिलाओं की विधायी भागीदारी बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा मील का पथर स्थापित किया।

इसी तरह, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए आरक्षण की मांग लंबे समय से हो रही थी. मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल के अंत में जनवरी 2019 में सामान्य वर्ग के गरीबों के लिए आर्थिक आधार पर 10 फीसदी आरक्षण का प्रावधान किया. इस संविधान संशोधन को संसद से पास कराकर लागू किया गया, जिससे अब आर्थिक रूप से पिछड़े लोग सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं।

मुख्यमंत्री के रूप में गुजरात से शुरू हुआ नरेंद्र मोदी का प्रशासनिक सफर आज प्रधानमंत्री के रूप में वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को मजबूत करने तक पहुंचा है. 25 वर्षों के इस सफर में उनके प्रशासनिक व आर्थिक फैसलों का मुख्य ध्यान कड़े नियंत्रण, राष्ट्रीय सुरक्षा, और बड़े पैमाने पर जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन पर रहा है. ये फैसले भारतीय राजनीति के इतिहास में हमेशा महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देखे जाएंगे।

बुजुर्गों की अनदेखी और बिखरते पारिवारिक मूल्य

पहली नजर में देखने पर ऐसा लगता है कि ऐसा सोचना सही ही होगा। आखिर समाज और आर्थिकी को चलाने के लिए युवा चाहिए। कोरोना महामारी के समय भी ऐसा बहुत कुछ सुनने को मिला था। किसी भी दल की सरकार हो, वे अपनी जो भी योजनाएं बनाती हैं, वे युवाओं को लक्षित होती हैं। दूसरी ओर, चीन, जापान और यूरोप के बहुत से देश हैं, जहां लोग अब बच्चे नहीं पैदा करना चाहते। कहीं यह सरकारी नीतियों की उपज है, तो कहीं समाज की मानसिकता का बन गया हिस्सा। मगर अब वहां की सरकारें कह रही हैं कि आगे उनका देश कैसे चलेगा, क्योंकि उनके यहां बुजुर्गों की संख्या बढ़ती जा रही है। उनकी सामाजिक सुरक्षा योजना पर काफी खर्च होता रहा है।

‘लोग बुढ़ापे से डरते हैं’ – भारत में भी बाल सफेद होते ही स्त्री या पुरुष को वृद्ध के खाते में डाल दिया जाता है। यानी प्रकारांतर से कहा जाता है कि अब समाज को उसकी ज़रूरत नहीं। ‘चित्रलेखा’ उपन्यास का वह वाक्य याद आता है, जहां शृंगार करते हुए एक महिला चित्रलेखा से कहती है कि- देवी, सफेद बाल! फिल्म में नायिका को एकाएक

(क्षमा त्रिपाठी)

मगर कई लोक कथाएं ऐसी मिलती हैं, जहां जब युवा वर्ग किसी परेशानी में फंसा है, तो बुजुर्ग ही उन्हें उस मुसीबत से निकालते हैं। ये एक तरह से उनके अनुभव के महत्व को समझना है।

कुछ दिन पहले कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई से जुड़ी एक कंपनी के मालिक ने कहा था कि इन बूढ़ों की बात मत सुनिए। उन्होंने यह कोई नई बात नहीं कही। वृद्ध होते ही समाज आपको एक दयनीय चीज समझता है। कई बार सरकारें भी इस आशय की बात कहती रहती हैं कि वृद्ध लोग अर्थव्यवस्था पर बोझ हैं।

पहली नजर में देखने पर ऐसा लगता है कि ऐसा सोचना सही ही होगा। आखिर समाज और आर्थिकी को चलाने के लिए युवा चाहिए। कोरोना महामारी के समय भी ऐसा बहुत कुछ सुनने को मिला था। किसी भी दल की सरकार हो, वे अपनी जो भी योजनाएं बनाती हैं, वे युवाओं को लक्षित होती हैं। दूसरी ओर, चीन, जापान और यूरोप के बहुत से देश हैं, जहां लोग अब बच्चे नहीं पैदा करना चाहते। कहीं यह सरकारी नीतियों की उपज है, तो कहीं समाज की मानसिकता का बन गया हिस्सा। मगर अब वहां की सरकारें कह रही हैं कि आगे उनका देश कैसे चलेगा, क्योंकि उनके यहां बुजुर्गों की संख्या बढ़ती जा रही है। उनकी सामाजिक सुरक्षा योजना पर काफी खर्च होता रहा है।

शीशे में अपनी शक्ल दांत टूटी हुई, एक अशक्त बुढ़िया से रूप में नजर आने लगती है। यानी लोग बुढ़ापे से डरते हैं।

बुढ़ापा यानी मृत्यु के आसपास होने का अहसास। शायद यही कारण है कि अब चाहे कोई स्त्री हो या पुरुष, बहुत कम लोगों के बाल सफेद नजर आते हैं। सौंदर्य उद्योग ने भी अपने उत्पादों को लोकप्रिय करने के लिए मुहावरा चलाया है- ‘एज इज जस्ट ए नंबर’, यानी उम्र सिर्फ एक अंक भर है।

जब तक अपने यहां संयुक्त परिवारों का बोलबाला था, तब तक फिर भी घरों में बुजुर्गों की कुछ अहमियत थी। हालांकि तब भी ऐसे मामले होते थे, जब किसी बुजुर्ग को बहुत से परिवार वाले किसी ऐसे स्थान पर छोड़ आते थे, जहां से वे फिर कभी घर न लौट सकें।

‘अनुभव उम्र से ही तय होता है’ –

मगर कई लोक कथाएं ऐसी मिलती हैं, जहां जब युवा वर्ग किसी परेशानी में फंसा है, तो बुजुर्ग ही उन्हें उस मुसीबत से निकालते हैं। ये एक तरह से उनके अनुभव के महत्व को समझना है। अनुभव उम्र से ही तय होता है। जन्म लेते ही कोई अनुभवी नहीं हो जाता।

जब से एकल परिवारों का चलन दुनिया भर में बढ़ा है, तब से बुजुर्गों की हालत खराब होती जा रही है। पश्चिम में तो फिर भी सरकारों की तरफ से कुछ योजनाएं उनके लिए हैं। अच्छे वृद्धाश्रम भी हैं, लेकिन अपने यहां ऐसा बहुत कम है। इंटरनेट पर मौजूद वीडियो में अक्सर दिखता है कि कभी बहु,

तो कभी बेटा, तो कभी बेटी, वृद्ध माता-पिता के संसाधनों पर कब्जा जमाकर उन्हें वृद्धाश्रमों में छोड़ने की बातें करते हैं।

अपने देश में सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2022 में बुजुर्गों की आबादी 15.3 करोड़ थी। 2050 तक इनकी आबादी 34.7 करोड़ होने का अनुमान है।



इसीलिए मांग की जा रही है कि अब सेवानिवृत्ति की उम्र को बढ़ाया जाए। सेवानिवृत्ति के बाद भी ऐसे काम हों, जिन्हें उम्रदराज लोग कर सकें। उनकी कुछ आय हो जाए और वे बच्चों पर निर्भर न रहें। **‘बुजुर्गों के मसले पर बहुत बेमन से सोचा जाता है’** – मगर अपने यहां सरकारों की यह सोच नहीं बदली है कि इन दिनों भी बच्चे माता-पिता के साथ रहते होंगे। इसीलिए बुजुर्गों के मसलों पर बहुत बेमन से सोचा जाता है। यहां तक कि बहुत सारी विदेशी कंपनियां भी भारत आकर ऐसा ही सोचती हैं।

इस संदर्भ में बहुत पहले की एक घटना कई लोगों को

याद होगी। एक युवा को बहुत बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी मिली, लेकिन उसने घर के किराए का भत्ता नहीं दिया गया। कारण पछने पर कंपनी ने कहा कि आप तो अपने माता-पिता के साथ रहते होंगे। कुछ साल पहले एक सर्वेक्षण में बताया गया था कि भारत में तिरसठ फीसद युवा परिवार के साथ नहीं रहना चाहें।

‘बुजुर्ग अपने बच्चों की शिकायत तक नहीं करते’ – जब से यह बात चली है कि भारत सबसे युवा आबादी वाला देश है, पैसंद फीसद लोग युवा हैं, तब से शायद ही किसी राजनीतिक पार्टी को हमने बुजुर्गों की इतनी बड़ी आबादी के हितों के बारे में बात करते सुना होगा। इनके वोट तो सभी को चाहिए, लेकिन ये सबसे उपेक्षित नागरिक बना दिए गए हैं। सही है कि कभी-कभार अदालतें ज़रूर लताड़ लगाती हैं, लेकिन अदालतों तक कितने लोग पहुंच पाते हैं! परिवार की प्रतिष्ठा की खातिर ज्यादातर बुजुर्ग अपने बच्चों की शिकायत तक नहीं करते।

पिछले दिनों एक बेटे ने अपनी मां से मारपीट की। जब पुलिस ने उसे पकड़ा, तो उसे ने कहा कि मेरा बेटा तो बहुत अच्छा है। अगर उसने पीटा होता, तो क्या मुझे चोट न लगती? जबकि इस घटना का वीडियो ही उपलब्ध था।

एक ओर कोई बुजुर्ग अपने बेटे को बचाने के लिए इस हद तक चला जाता है कि अपने खिलाफ बेटे की हिंसा और अपमान को भी नजरअंदाज करता है, दूसरी ओर बेटा अपने स्वार्थ में पिता के प्रति न्यूनतम संवेदना भी नहीं रख पाता। सवाल है कि जहां बुजुर्गों को ऐसे दुराग्रहों के बीच जीवन गुजारना पड़ रहा हो, वहां एक संवेदनशील समाज का हिस्सा होने पर हम कैसे खुश हो लें!

पाकिस्तानियों से ज्यादा लंबी जिंदगी जीते हैं भारतीय, पर बांग्लादेशी ज्यादा जीते हैं

(नীরज कुमार दुबे)

पाकिस्तानियों से लंबी जिंदगी जीते हैं भारतीय, लेकिन बांग्लादेशी उनसे भी आगे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के ताजा आंकड़ों ने दक्षिण एशिया में जीवन-प्रत्याशा की एक चौकाने वाली तस्वीर सामने रखी है। वर्ष 2023 में भारत में औसत जीवन-प्रत्याशा 71 वर्ष रही, जबकि पाकिस्तान में यह आंकड़ा महज 68.2 वर्ष था।

पाकिस्तानियों से ज्यादा जीते हैं भारतीय, मगर भारतीयों से भी ज्यादा जीते हैं बांग्लादेशी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के ताजा आंकड़े भारत की जीवन-प्रत्याशा की एक दिलचस्प तस्वीर सामने रखते हैं। वर्ष 2023 में एक भारतीय की औसत जीवन-प्रत्याशा 71 वर्ष रही, जबकि पाकिस्तान में यह 68.2 वर्ष थी। लेकिन बांग्लादेश 72.7 वर्ष के साथ भारत से आगे निकल गया। अमेरिका और कनाडा तो इससे भी काफी आगे हैं। यानी भारत ने पाकिस्तान को पीछे ज़रूर छोड़ा है, लेकिन लंबी जिंदगी के मामले में अभी बांग्लादेश से भी पिछड़ रहा है। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। भारतीयों की बढ़ती उम्र के साथ सबसे बड़ा सवाल यह है कि इस जिंदगी में स्वस्थ रहने के कितने साल शामिल हैं।

हम आपको बता दें कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के ताजा वैश्विक स्वास्थ्य आकलन ने भारत की सेहत की ऐसी तस्वीर सामने रखी है, जिसमें एक तरफ महामारी के बाद जीवन-प्रत्याशा तेजी से संभली है, तो दूसरी तरफ हृदय रोग, मधुमेह, पक्षाघात और फेफड़ों की पुरानी बीमारियां मौत की सबसे बड़ी वजह बनती जा रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में स्वस्थ जीवन-प्रत्याशा वर्ष 2023 में केवल 60.6 वर्ष रही। यानी औसतन जीवन के अंतिम करीब दस से वर्ष किसी न किसी बीमारी, अक्षमता या स्वास्थ्य संबंधी परेशानी के साथ गुजरने की आशंका बनी रहती है। वर्ष 2019 में यही आंकड़ा 60.5 वर्ष था। महामारी के दौरान यह 2021 में घटकर 58.4 वर्ष रह गया और फिर 2022 में 60.2 तथा 2023 में 60.6 वर्ष तक पहुंचा।

रिपोर्ट के मुताबिक, महामारी के बाद भारत ने जीवन-प्रत्याशा में उल्लेखनीय वापसी की है। वर्ष 2019 में यह 70.5 वर्ष थी, जो 2021 में गिरकर 68.1 वर्ष हो गई। इसके बाद 2022 में यह फिर 70.5 वर्ष और 2023 में 71 वर्ष पहुंच गई। यानी महज दो वर्षों में भारत ने अनुमानित जीवन के 2.9 वर्ष वापस हासिल कर लिए। लेकिन स्वस्थ जीवन-प्रत्याशा की वापसी केवल 2.2 वर्ष रही। यही अंतर भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था

के सामने सबसे गंभीर चुनौती को उजागर करता है।

बुजुर्गों के मामले में भी तस्वीर कुछ बेहतर हुई है। वर्ष 2023 में 60 वर्ष की उम्र तक पहुंच चुके व्यक्ति के औसतन 18.8 वर्ष और जीने की उम्मीद थी, जबकि 2019 में यह 18.4 वर्ष थी। लेकिन इनमें पूरी तरह स्वस्थ रहने वाले वर्षों की संख्या 13.7 वर्ष ही थी। साफ है कि उम्र बढ़ रही है, मगर स्वस्थ उम्र उतनी तेजी से नहीं बढ़ रही। इसके अलावा, भारत की बीमारियों की तस्वीर भी पिछले दो दशकों में पूरी तरह बदल गई है। वर्ष 2000 में देश में मौत के दस प्रमुख कारणों में संक्रामक बीमारियों की हिस्सेदारी करीब 62 प्रतिशत थी, जबकि गैर-संचारी बीमारियों की हिस्सेदारी 34 प्रतिशत थी। वर्ष 2023 तक तस्वीर उलट गई। गैर-संचारी बीमारियां करीब 75 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ मौत की सबसे बड़ी वजह बन गईं, जबकि संक्रामक बीमारियों की हिस्सेदारी घटकर करीब 16 प्रतिशत रह गई। बाकी हिस्सेदारी चोट और दुर्घटनाओं जैसी वजहों की रही।

बीमारियों की बदलती तस्वीर को मौत के आंकड़ों से आसानी से समझा जा सकता है। वर्ष 2000 में भारत में क्षय रोग और दस्त जैसी संक्रामक बीमारियां मौत की बड़ी वजह थीं। तब प्रति एक लाख आबादी पर क्षय रोग से 92.4 और दस्त से 87.8 मौतें होती थीं। लेकिन वर्ष 2023 तक तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी थी। अब हृदय रोग सबसे बड़ा जानलेवा कारण बन गया, जिससे प्रति एक लाख आबादी पर 138.5 मौतें दर्ज हुईं। इसके बाद फेफड़ों की पुरानी बीमारी से 83.19, पक्षाघात से 74.8 और मधुमेह से 49.01 मौतें प्रति एक लाख आबादी पर हुईं। यानी भारत अब केवल संक्रमण से नहीं, बल्कि दिल, फेफड़ों, मधुमेह और पक्षाघात जैसी लंबी बीमारियों से भी बड़ी जंग लड़ रहा है।

फिर भी संक्रामक बीमारियों को समाप्त मान लेना बड़ी भूल होगी। दस्त, क्षय रोग और निचले श्वसन तंत्र के संक्रमण अब भी भारत में मौत के दस प्रमुख कारणों में शामिल हैं। यानी भारत को एक साथ पुरानी बीमारियों और नई जीवनशैली वाली बीमारियों, दोनों मोर्चों पर लड़ना पड़ रहा है। दूसरी ओर, दुनिया की तस्वीर भी भारत से बहुत अलग नहीं है। वर्ष 2023 में वैश्विक जीवन-प्रत्याशा 73.3 वर्ष पहुंच गई, जो 2019 के 73.4 वर्ष के लगभग बराबर है। लेकिन वैश्विक स्वस्थ जीवन-प्रत्याशा 62.8 वर्ष ही रही, जो 2019 से अब भी 0.4 वर्ष कम है।

दूध निकाला, पुण्य कमाया, फिर सड़क पर धकेला – नवरात्रि में सड़कों पर सिसक रही ‘गोमाता’

मूक पत्रिका

रायगढ़= नवरात्रि के पावन पर्व पर चारों तरफमाता रानी के भव्य दरबार सजे हैं, मंदिरों में घंटे-घड़ियाल गूंज रहे हैं। लेकिन इन जगमगाते पंडोलों के ठीक बाहर सड़कों पर पसरा एक कड़वा सच सता, प्रशासन और समाज तीनों के मुंह पर तमाचा मार रहा है।जिन बेजुबानों को धर्म में ‘माता’ का दर्जा दिया गया, वे आज अपनी भूख शांत करने के लिए कचरे के ढेर और ड्रैपिंग यार्ड में मुंह मारने को मजबूर हैं। कचरे में भोजन तलाशते हुए ये मूक प्राणी पॉलीथिन और प्लास्टिक निगल जाते हैं, जिसेसे पेट में कई किलो प्लास्टिक जमा हो जाता है। और वे तड़प-तड़पकर जान दे देते हैं।

दूध निकाला और सड़क पर धकेला– इस पूरी त्रासदी के सबसे बड़े गुनहवार वे स्थायी पशुपालक और दूध व्यापारी हैं, जो सुबह-शाम गाय का दूध निकालकर अपनी जेबें भरते हैं, लेकिन बर्तन खाली होते ही इन बेजुबानों को सड़कों पर भटकने और हादसों का शिकार होने के लिए बेसहारा छोड़ देते हैं।

आंगनबाड़ी सहायिका के रिक्त पदों पर आवेदन आमंत्रित, 22 अक्टूबर तक कर सकेंगे ऑनलाइन आवेदन

मूक पत्रिका

बेमेतरा – एकीकृत बाल विकास परियोजना साजा अंतर्गत आंगनबाड़ी सहायिका के रिक्त पदों पर भर्ती के लिए पात्र आवेदिकाओं से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। छत्तीसगढ़ शासन, महिला एवं बाल विकास विभाग के निर्धारित निर्देशों एवं मापदंडों के अनुसार यह भर्ती प्रक्रिया पूरी की जाएगी।संचालनालय महिला एवं बाल विकास विभाग, छत्तीसगढ़, नवा रायपुर के दिनांक 5 जनवरी 2026 के निर्देशानुसार रिक्त पदों पर ऑनलाइन माध्यम से नियुक्ति की जाएगी। इसके तहत इच्छुक एवं पात्र स्थानीय महिला अर्थात्थी 8 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2026 तक निर्धारित ई-भर्ती पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकती हैं।इस भर्ती के अंतर्गत आंगनबाड़ी केंद्र ग्राम पंचायत भटगांव में सहायिका का

लंबित प्रकरणों का समय पर करें निराकरण, योजनाओं में लाएं तेजी : कलेक्टर विश्वदीप पीएम आवास निर्माण की बाधाएं दूर करने गांवों में हितग्राहियों से संवाद करेंगे अधिकारी

मूक पत्रिका

बीजापुरा बीते मंगलवार को जिले में शासकीय योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और आम नागरिकों से जुड़े मामलों के त्वरित निराकरण को लेकर कलेक्टर विश्वदीप ने अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। जिला कार्यालय में आयोजित साप्ताहिक समय-सीमा बैठक में उन्होंने लंबित प्रकरणों, राजस्व मामलों, एग्रीस्टेक पंजीयन और प्रधानमंत्री आवास योजना सहित विभिन्न विभागीय कार्यों की समीक्षा की। कलेक्टर ने पात्र पोर्टल पर लंबित आवेदनों का निर्धारित समय-सीमा में निराकरण सुनिश्चित करने को कहा। राजस्व पुस्तक परिपत्र 6-4 के अंतर्गत लंबित प्रकरणों में पात्र प्रभावित परिवारों को नियमानुसार राहत राशि उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक प्रक्रिया में तेजी

लाने के निर्देश दिए।

किसानों के पंजीयन में तेजी लाने के निर्देश–फर्मर रजिस्ट्री और एग्रीस्टेक पंजीयन की समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने राजस्व एवं कृषि विभाग को समन्वय के साथ कार्य करने को कहा। उन्होंने सभी पात्र किसानों का पंजीयन सुनिश्चित करने, भूमि अभिलेखों को अद्यतन करने तथा पंजीयन में आने वाली तकनीकी और दस्तावेज संबंधी समस्याओं का

शीघ्र समाधान करने के निर्देश दिए।

स्वामित्व योजना के लंबित कार्यों को भी प्राथमिकता से पूरा करने पर जोर दिया।

हितग्राहियों की समस्याओं का मौके पर करें समाधान–सीईओ जिला पंचायत नम्रता चौबे ने प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की समीक्षा करते हुए निर्माणाधीन आवासों को जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी



गौशालाओं, गोधाम, गौ सेवा केंद्रों तथा नगर निगमों, नगर पालिकाओं और ग्राम पंचायतों को बेसहारा गोवंश के संरक्षण, चारे-पानी और चिकित्सा के लिए हर साल करोड़ों का फंड जारी किया जाता है।लेकिन धरातल की हकीकत खौफनाक है। आरोप है कि अधिकांश गौशालाएं केवल सरकारी अनुदान ऐंटने और बड़े आयोजन कर चंदा वसूली का जरिया बन चुकी हैं। जो चल भी रही हैं, वहां केवल दूध देने वाले पशुओं की कद्र है।

कांजी हाउस कागजों में, बेजुबान सड़क पर तड़पने को मजबूर–नगर पालिकाओं और नगर निगमों के पास ‘पशु पकड़ो अभियान’ और ‘पॉलीथिन मुक्त शहर’

के नाम पर अलग से बजट होता है, लेकिन आरोप है कि यह फंड कागजी बैठकों में ही साफ हो जाता है। दुर्घटनाओं में घायल या प्लास्टिक खाने से कराहते गोवंश के लिए न तो कोई एम्बुलेंस है और न ही पशु चिकित्सकों का पर्याप्त अमला है।

तीखा सवाल – कब तक बेमौत मरती रहेगी गोमाता?–आखिर कब तक ये बेजुबान स्थायी पशुपालकों और प्रशासनिक लापरवाही की भेंट चढ़ते रहेंगे? क्या नगर निगम और पंचायतों का फंड केवल कागजी खानापूर्ति के लिए है? क्या प्रशासन ऐसे पशुपालकों पर कार्रवाई करेगा, या फिर ‘गोमाता’ यूं ही सड़कों और कचरे के ढेरों पर बेमौत मरती रहेगी?

नोनी सशक्ति करण योजना से गुड़िया के उज्ज्वल भविष्य को मिलेगा आर्थिक संबल, 18 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर मिलेगी एक लाख रुपये की सहायता सेवा की कहानी : संगीता यादव की बेटी गुड़िया के भविष्य को संवारने की दिशा में शासन की पहल

मूक पत्रिका

बेमेतरा, बेटियां परिवार की खुशियों और समाज के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला होती हैं। उन्हें सुरक्षित, शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवश्यक अवसर एवं सहयोग उपलब्ध कराना समाज और शासन दोनों की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शासन द्वारा विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। नोनी सशक्तिकरण योजना भी बेटियों के भविष्य को आर्थिक संबल प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना के माध्यम से बेमेतरा की निवासी संगीता यादव की बेटी गुड़िया के भविष्य के लिए आर्थिक सहायता का प्रावधान है।



योजना की पात्रता संबंधी शर्तें पूरी होने पर गुड़िया को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता मिलेगी। संगीता यादव के परिवार के लिए यह योजना अपनी बेटी के भविष्य को लेकर नई उम्मीद का आधार है। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए परिवार अनेक सपने

संजोते हैं। विशेष रूप से बेटियों की शिक्षा, उनके व्यक्तित्व विकास और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए आर्थिक सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ऐसे में नोनी सशक्तिकरण योजना के तहत मिलने वाली सहायता भविष्य में गुड़िया के सपनों को साकार करने में सहायक हो सकती है। **बेटियों के भविष्य को सुरक्षित बनाने की दिशा में पहल**–नोनी सशक्तिकरण योजना का उद्देश्य पात्र गुड़िया को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता मिल सके। संगीता यादव की बेटी गुड़िया के लिए 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद एक लाख रुपये की सहायता का प्रावधान भविष्य की जरूरतों के लिए

आर्थिक आधार तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण है। इससे परिवार को बेटी के भविष्य की योजनाएं बनाने में सहयोग मिलने की उम्मीद है।बेटियों को शिक्षा और विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना समाज की प्रगति के लिए भी आवश्यक है। जब परिवारों को बेटियों के भविष्य के लिए आर्थिक सुरक्षा का भरोसा मिलता है, तब वे उनके बेहतर कल के लिए अधिक योजनाबद्ध तरीके से प्रयास कर सकते हैं। ऐसी योजनाएं बेटियों के सम्मान, उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता और आत्मनिर्भरता को भावना को प्रोत्साहित करने में सहायक होती हैं। **आर्थिक संबल से साकार होंगे बेहतर भविष्य के सपने**–संगीता यादव की बेटी गुड़िया के लिए योजना के अंतर्गत प्रावधान सहायता भविष्य में उसकी

आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में उपयोगी साबित हो सकती है। 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद मिलने वाली एक लाख रुपये की आर्थिक सहायता उसके आगे के जीवन की योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण संबल बन सकती है। इससे परिवार को गुड़िया के भविष्य को ध्यान में रखते हुए आवश्यक निर्णय लेने में मदद मिल सकती है। जनकल्याणकारी योजनाओं की सार्थकता तभी सुनिश्चित होती है, जब पात्र हितग्राहियों तक उनकी जानकारी पहुंचे और वे निर्धारित प्रक्रिया के माध्यम से लाभ प्राप्त कर सकें। इसी दृष्टि से योजनाओं के प्रति जागरूकता और पात्र परिवारों तक जानकारी पहुंचाना महत्वपूर्ण है, ताकि कोई भी पात्र हितग्राही शासन की सहायता से वंचित न रहे।

शास. आई.टी.आई. बेरला में वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम संपन्न, युवाओं को बैंकिंग, बीमा और साइबर सुरक्षा के प्रति किया गया जागरूक

मूक पत्रिका

बेमेतरा – युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त और जागरूक बनाने के उद्देश्य से शासकीय आई.टी.आई. बेरला में एक दिवसीय वित्तीय साक्षरता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय रिजर्व बैंक के दिशा-निर्देशों के तहत मनीवाइज सेंटर फॉर फइनेंशियल लिटेरेसी परियोजना के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसमें सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ बड़ौदा, आरोह फाइनेशन और सहयोगी संस्था ‘समर्पित’ की अहम भूमिका रही।कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में एम.आर. राजू (स्नट्ट, जिला बेमेतरा), लेखराम भारती (वित्तीय काउंसलर, बेरला ब्लॉक) और गुलशन कुमार (सहायक स्नट्ट काउंसलर, नवागढ़ ब्लॉक) विशेष रूप से उपस्थित रहे।



सरकारी योजनाओं और बचत पर दिशा गया जोर –वित्त्य विशेषज्ञों ने प्रशिक्षणार्थियों को बैंक खातों के प्रकार, केवाईसी (चड्डुष्ट) के महत्व और बचत की आदत डालने के बारे में विस्तृत जानकारी दी। साथ ही भारत सरकार की प्रमुख सामाजिक सुरक्षा योजनाओं – प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और अटल पेंशन योजना के लाभ बताए गए। युवाओं को बताया गया कि कैसे वे न्यूनतम प्रीमियम के साथ अपने और परिवार का भविष्य

सुरक्षित कर सकते हैं। **साइबर उगी से बचने के बताए गए उपाय** –बढ़ते डिजिटल लेन-देन के बीच साइबर धोखाधड़ी से बचाव पर विशेष जोर दिया गया। युवाओं को सतर्क किया गया कि वे अपना इड्रकूड क्लहू या पासवर्ड किसी के साथ साझा न करें। किसी भी प्रकार की ऑनलाइन उगी होने पर तुरंत राष्ट्रीय साइबर हेलपलाइन नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज कराने की सलाह दी गई। **उद्गम पोर्टल और बैंकिंग लोकपाल की जानकारी** –

कार्यक्रम में छत्ररू पोर्टल के माध्यम से भूली हुई पूंजी खोजने की प्रक्रिया समझाई गई। बैंक खातों में नॉर्मिनी दर्ज कराने की अनिवार्यता और ग्राहकों की समस्याओं के निवारण हेतु ऋद्ध बैंकिंग लोकपाल योजन के बारे में भी विस्तार से चर्चा हुई। इस अवसर पर आई.टी.आई. बेरला के अधीक्षक, शिक्षकगण और बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे। अंत में सभी प्रतिभागियों ने वित्तीय अनुशासन अपनाने और अपने परिवार व समाज को जागरूक करने का संकल्प लिया।

कटंगपाली ‘अ’ आयुष्मान आरोग्य मंदिर का राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के तहत मूल्यांकन, स्वास्थ्य सेवाओं और सुविधाओं की हुई जांच..

मूक पत्रिका

सांरगढ़-बिलाईगढ़॥ बरमकेला विकासखंड के आयुष्मान आरोग्य मंदिर कटंगपाली ‘अ’ में 12 अक्टूबर को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक (ह्रक्क) के तहत राष्ट्रीय स्तर का मूल्यांकन किया गया। भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा नामित मूल्यांकनकर्ता डॉ. सिद्धार्थ चगलेटी (आंध्र प्रदेश) और डॉ. महेंद्र सरादा प्रसाद बेहेरा (ओडिशा) ने स्वास्थ्य केंद्र पहुंचकर वहां उपलब्ध सुविधाओं, स्वास्थ्य सेवाओं और राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की जांच की। इस मूल्यांकन का उद्देश्य स्वास्थ्य संस्थान में मरीजों को दी जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता और निर्धारित मानकों के अनुपालन का आकलन करना है। **स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर स्वच्छता व्यवस्था तक की जांच**–मूल्यांकन के दौरान बाह्य रोगी विभाग, आंतरिक रोगी विभाग, प्रसव कक्ष, प्रयोगशाला और विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य



कार्यक्रमों से जुड़े अभिलेखों एवं पंजी का परीक्षण किया गया। मूल्यांकनकर्ताओं ने अधिकारियों और कर्मचारियों से बातचीत कर स्वास्थ्य सेवाओं के संचालन, कार्यप्रणाली तथा निर्धारित प्रक्रियाओं के पालन की जानकारी भी ली। इसके साथ ही औषधीय पौधों की वाटिका, जैव चिकित्सा अभिलेखों को अद्यतन किया गया। प्रयोगशाला में उपलब्ध जांच सुविधाओं और जांच प्रक्रिया

की भी समीक्षा की गई। **राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की भी समीक्षा**–निरीक्षण के दौरान क्षय रोग, कुछ रोग, नेत्र स्वास्थ्य, मलेरिया, फहलेरिया, दंत स्वास्थ्य तथा कान, नाक और गला संबंधी स्वास्थ्य सेवाओं सहित विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के अभिलेखों और क्रियान्वयन की जांच की गई। मूल्यांकनकर्ताओं ने संस्थान में

उपलब्ध सुविधाओं, रिकॉर्ड संधारण, मरीजों की सुरक्षा और निर्धारित गुणवत्ता मानकों के पालन का समग्र आकलन किया। निरीक्षण के आधार पर गोपनीय प्रतिवेदन भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया है। हालांकि, मूल्यांकन के अंतिम परिणाम या प्रमाणिक की स्थिति की जानकारी अभी जारी नहीं की गई है।

कलेक्टर के निर्देश पर की गई थी तैयारी–कलेक्टर पद्मिनी भोई साहू के निर्देश, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. पुष्येंद्र वैष्णव के मार्गदर्शन और खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. अवधेश पाणिग्राही के नेतृत्व में बरमकेला विकासखंड के स्वास्थ्य संस्थानों को राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में जिला कार्यक्रम प्रबंधक दीपक धारा, जिला अकाउंट मैनेजर मनोज साहू और जिला ह्रक्क सलाहकार कृष्ण पुरी गोस्वामी की निगरानी में कटंगपाली ‘अ’ स्वास्थ्य केंद्र में आवश्यक तैयारियों की गईं। इनमें स्वास्थ्य सेवाओं का उन्नयन, कर्मचारियों की प्रशिक्षण, अभिलेखों का संधारण और सेवाओं की

गुणवत्ता में सुधार शामिल रहा। तैयारियां पूरी होने के बाद मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन आवेदन किया गया था। **स्वास्थ्य विभाग की टीम का रहा सहयोग**–मूल्यांकन की तैयारी और प्रक्रिया में खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. अवधेश पाणिग्राही, विकासखंड कार्यक्रम प्रबंधक ईश्वर दिनकर, लेखा प्रबंधक रत्ना देवांगन, सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी सविता डनसेना, महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्रोपति पारेक्षर, पुरुष स्वास्थ्य कार्यकर्ता राज किशोर मनहर, सेक्टर प्रभारी बोन्दा संतोष प्रधान, सेक्टर पर्यवेक्षक तथा सेक्टर बोन्दा के अन्य अधिकारियों और कर्मचारियों का सहयोग रहा। राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानकों के तहत मूल्यांकन का उद्देश्य स्वास्थ्य संस्थानों में स्वच्छता, मरीजों की सुरक्षा, पारदर्शिता और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना है। कटंगपाली ‘अ’ स्वास्थ्य केंद्र का मूल्यांकन इसी दिशा में उज्जया गया कदम है। अब अंतिम मूल्यांकन परिणाम के आधार पर संस्थान की गुणवत्ता संबंधी स्थिति स्पष्ट होगी।

सांक्षिप्त

साप्ताचार

रणजी ट्रॉफी

रवींद्र जडेजा का चला बल्ला, सौराष्ट्र के लिए लगाया शतक, रिंकू का भी जलवा कायम

नई दिल्ली। रणजी ट्रॉफी 2026-27 सीजन की शुरुआत रवींद्र जडेजा ने सौराष्ट्र की ओर से खेलते हुए शानदार अंदाज में की है। जडेजा ने बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए शतकीय पारी खेली। वहीं, उत्तर प्रदेश की तरफ से खेलते हुए रिंकू सिंह ने भी शतक लगाया। जडेजा ने छत्तीसगढ़ के खिलाफ खेलते हुए 209 गेंदों का सामना करते हुए 102 रनों की दमदार पारी खेली। अपनी इस पारी में उन्होंने 7 चौके लगाए। जडेजा जब बल्लेबाजी करने उतरे, तो सौराष्ट्र का स्कोर 3 विकेट खोकर 120 रन था। उन्होंने चौथे विकेट के लिए चिराग जानी के साथ



मिलकर 31 रनों की साझेदारी निभाई। चिराग के आउट होने के बाद प्रेरक मांकड़ के रूप में जडेजा को अच्छा जोड़ीदार मिला। दोनों ने मिलकर पांचवें विकेट के लिए 205 रनों की बेहतरीन साझेदारी निभाई। प्रेरक ने 150 गेंदों का सामना करते हुए 129 रनों की बेहतरीन पारी खेली। जडेजा और प्रेरक की शतकीय पारी की बदौलत सौराष्ट्र की टीम 392 रनों के टोटल तक पहुंचने में सफल रही। चिराग जानी ने 83 रनों का योगदान दिया। वहीं, बिहार के खिलाफ उत्तर प्रदेश की तरफ से खेलते हुए रिंकू सिंह ने भी शतकीय पारी खेली। रिंकू ने 168 गेंदों में 112 रन बनाए। उन्होंने अपनी इस पारी में 8 चौके और 3 छक्के लगाए। रिंकू ने माधव कोशिक के साथ मिलकर 312 गेंदों में 207 रनों की साझेदारी निभाई।

150वीं वर्षगांठ पर टेस्ट में खास जर्सी पहनकर उत्तरेगी ऑस्ट्रेलियाई टीम

एमसीजी में इंग्लैंड से होगी मिड्रंट
मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया की टीम अगले साल मार्च में मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में इंग्लैंड के खिलाफ खेले जाने वाले 150वीं वर्षगांठ टेस्ट के दौरान खास सफेद जर्सी पहनेगी। इस विशेष टेस्ट किट में ऑस्ट्रेलिया के पारंपरिक हरे और सुनहरे रंग को शामिल किया जाएगा, ताकि इस ऐतिहासिक मौके को यादगार बनाया जा सके। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने सोमवार को इस विशेष किट का अनावरण किया, जिसे 11 मार्च से शुरू होने वाले 150वीं वर्षगांठ टेस्ट से टीक 150 दिन पहले लॉन्च किया गया। इस ऐतिहासिक किट में पारंपरिक गोल्डन वॉटल ट्रिम की जगह



सुनहरे रंग का इस्तेमाल किया गया है, जबकि एक हरा प्लेकेट भी जोड़ा गया है। जर्सी की स्लीव पर सुनहरे रंग में 150वीं वर्षगांठ टेस्ट का विशेष लोगो और किट निर्माता कंपनी एएसआईएसएस का लोगो लगाया गया है। इसके अलावा, कॉलर, शर्ट और पैट की साइड सीम पर सुनहरी पाइपिंग दी गई है, जबकि बटनो पर भी सुनहरे रंग की फिनिश दिखाई देगी। यह डिजाइन ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट की विरासत और इस ऐतिहासिक मुकामबले के महत्व को दर्शाने के लिए तैयार किया गया है। इसके अलावा, यह किट वैसी ही है जैसी ऑस्ट्रेलिया की पुरुष टीम 2025-26 के समर सीजन में लॉन्च होने के बाद से टेस्ट मैचों में पहनती आ रही है। इसके कंधों पर मशहूर एबोरिजिनल आर्टिस्ट आदी फियोना क्लार्क की बनाई आदिवासी कलाकृति बनी है।

जयपुर रग्स वार्षिक विशेष छूट 2026 – कारीगरी का उत्सव, बेटियों की शिक्षा और आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम

नई दिल्ली: जयपुर रग्स, हाथ से बनाए गए रग्स और कालीनों के क्षेत्र में भारत के प्रमुख नामों में से एक, जयपुर रग्स वार्षिक सेल 2026 की घोषणा करता है। इस वर्ष लगभग 10,000 रग्स का एक विस्तृत संग्रह पेश किया जा रहा है, जिसमें अलग-अलग शिल्प, डिजाइन, तकनीक और कीमतों के विकल्प शामिल हैं। ग्राहकों को इन पर 60 प्रतिशत तक की छूट मिलेगी। लेकिन इस वर्ष जयपुर रग्स की सेल का उद्देश्य इससे कहीं बड़ा है। 2026 की इस पहल के तहत बिज्ी की एक निश्चित राशि ग्रामीण इलाकों की उन लड़कियों के लिए साइकिल फंड में दी जाएगी, जो स्कूल जाने के लिए लंबी दूरी पैदल तय करती हैं। यह पहल एक ऐसी वास्तविकता को सामने लाती है, जो देखने में बहुत साधारण लग सकती है—भारत के कई ग्रामीण इलाकों में घर से स्कूल की दूरी यह तय कर सकती है कि किसी लड़की के लिए शिक्षा किसीना आसान या मुश्किल होगी। इन लड़कियों के लिए साइकिल सिर्फ आने-जाने का साधन नहीं है। यह समय बचाने, लंबी दूरी कम करने, सुरक्षा बढ़ाने और स्कूल की पढ़ाई जारी रखने का एक

भारतीय कप्तान अख्तर ने जीत का श्रेय गेंदबाजों को दिया

कहा- हमारे प्लान क्लियर थे, अभिषेक और प्रिंस की पारियां भी अहम रहीं

इंदौर (एजेंसी)। भारत ने पांच मैचों की टी20 सीरीज के तीसरे मैच में मेहमान टीम को 14 रनों से मात दे दी. रविवार को इंदौर के होल्कर स्टेडियम में खेले गए मैच में टीम इंडिया ने पहले 223 रन बनाए और फिर वेस्टइंडीज को 20 ओवर में 209 रनों पर ही रोक दिया. जिसके साथ वो सीरीज में 2-1 से आगे निकल गए। मैच के बाद टीम इंडिया के कप्तान श्रेयस अख्तर ने अपने गेंदबाजों की साफ सोच और पक्के इरादों की तारीफ करते हुए कहा कि मैच में ओस ना पड़ने को वजह से गेंदबाज अपनी योजनाओं पर टिके रहे, जिसकी वजह से मैच में हमें जीत मिली. अश्वीप ने मैच में कुल 3 विकेट चटकाए, डेथ ओवरों में उनके यॉर्कर सबसे खास थे. इसके अलावा कप्तान ने जीत की नींव रखने वाली बल्लेबाजी की भी तारीफ की, खासकर अभिषेक शर्मा के 69 रन, ईशान किशन के 37 रन और आखिर में प्रिंस यादव की 13 रन की छोट्टी की। अपनी गेंदबाजी और बल्लेबाजी की तारीफ करने के साथ-साथ अख्तर ने ये भी कहा कि वेस्टइंडीज जैसी टीम को आप कभी हल्के में नहीं ले सकते. इसलिए हम कभी भी लापरवाह नहीं हो सकते थे. ये मैदान हार्ड-स्कोरिंग था, लेकिन यह जरूरी है कि हम अपनी प्रक्रिया और रूटीन पर टिके रहें और आक्रामक बने रहें।



गेंदबाज और बेहतर कर सकते :
कप्तान शाई होप – वहीं दूसरी तरफ मैच हारने वाले वेस्टइंडीज टीम के कप्तान शाई होप ने कहा कि गेंदबाज कप्तान ने जीत की नींव रखने वाली बल्लेबाजी की थी तारीफ की, खासकर अभिषेक शर्मा के 69 रन, ईशान किशन के 37 रन और आखिर में प्रिंस यादव की 13 रन की छोट्टी की। अपनी गेंदबाजी और बल्लेबाजी की तारीफ करने के साथ-साथ अख्तर ने ये भी कहा कि वेस्टइंडीज जैसी टीम को आप कभी हल्के में नहीं ले सकते. इसलिए हम कभी भी लापरवाह नहीं हो सकते थे. ये मैदान हार्ड-स्कोरिंग था, लेकिन यह जरूरी है कि हम अपनी प्रक्रिया और रूटीन पर टिके रहें और आक्रामक बने रहें।

नमनधीर का शानदार प्रदर्शन, 2 विकेट लिए

मैच की बात करें तो टॉस हारकर भारत ने 20 ओवर में 10 विकेट पर 223 रन बनाए. जिसमें सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा की 30 गेंद में पांच छक्कों और छह चौकों की मदद से 69 रनों की शानदार पारी शामिल है. इसके अलावा इशान किशन (37 रन, 18 गेंद, छह चौके, एक छक्का) के साथ दूसरे विकेट के लिए 108 रन जोड़कर भारत को बड़े स्कोर की नींव रख दी थी. वेस्टइंडीज की तरफ से रोस्टन चेस, शमर जोसेफ और शमर स्पिंगर दो-दो विकेट लेने में सफल रहे, जबकि किमो पॉल और गुडाकेश मोटी को एक-एक मिला। भारत के 224 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए वेस्टइंडीज की टीम 7 विकेट पर 209 रन ही बना सकी. जिसमें शिमरोन हेटमायर (43 रन, 26 गेंद, छह चौके, दो छक्के) और कामिल पूरन (42 रन, 27 गेंद, तीन छक्के, तीन चौके) की उम्दा पारियां शामिल थीं. इसके अलावा शमार स्पिंगर (11 गेंद में नाबाद 35, चार छक्के, दो चौके) ने अंत में तूफानी पारी खेली लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके. भारत की ओर से अश्वीप ने 44 रन पर तीन विकेट नमन धीर ने 39 रन पर दो विकेट चटकाए।

शानवी थपलियाल ने राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में जीता स्वर्ण पदक, पहले भी रहा है शानदार प्रदर्शन

पौड़ी (उत्तराखंड) (एजेंसी)। जनपद पौड़ी गढ़वाल की होनहार बाल खिलाड़ी शानवी थपलियाल ने राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर जिले का नाम रोशन किया है. शानवी ने लंबी कूद में स्वर्ण पदक और 50 मीटर दौड़ में कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया. खास बात यह रही कि व्यक्तिगत स्पर्धाओं में शानवी पौड़ी जनपद के लिए स्वर्ण पदक जीतने वाली प्रतिभागी बनीं. मूलरूप से पौड़ी की रहने वाली शानवी थपलियाल वर्तमान में अपने माता-पिता के साथ नैनीडांडा में रहकर शिक्षा ग्रहण कर रही हैं. उनके माता-पिता शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं. शानवी सरस्वती बाल निकेतन, नैनीडांडा की छात्रा हैं और प्राथमिक वर्ग की खेल प्रतियोगिताओं में लगातार बेहतर

प्रदर्शन कर रही हैं। शानवी की खेल प्रतिभा का परिचय ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिता में ही देखने को मिल गया था. नैनीडांडा ब्लॉक स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में 50 मीटर दौड़, 100 मीटर दौड़ और लंबी कूद में स्वर्ण पदक जीतकर प्राथमिक वर्ग की चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया. इसके बाद श्रीनगर में आयोजित मिनी गढ़देवा प्रतियोगिता में भी शानवी ने अपनी सफलता का सिलसिला जारी रखा. यहां उन्होंने 50 मीटर और 100 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक हासिल किए, जबकि लंबी कूद में रजत पदक जीता।

इसके साथ ही खो-खो प्रतियोगिता में भी उनकी टीम ने रजत पदक प्राप्त किया. उनके प्रदर्शन के आधार पर राज्य स्तरीय



प्रतियोगिता के लिए भी उनका चयन हुआ. राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में शानवी ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा साबित की. उन्होंने लंबी कूद में प्रथम स्थान

प्राप्त करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया, जबकि 50 मीटर दौड़ में तीसरा स्थान हासिल कर कांस्य पदक जीता.

लगातार विभिन्न स्तरों पर पदक जीतने वाली शानवी की इस उपलब्धि से विद्यालय और क्षेत्र में खुशी का माहौल है। कम उम्र में खेलों के प्रति उनकी लगन, मेहनत और निरंतर बेहतर प्रदर्शन अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायक है. शानवी की सफलता ने एक बार फिर साबित किया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रतिभाओं की कमी नहीं है और उचित अवसर मिलने पर यहां के बच्चे राज्य स्तर पर अपनी पहचान बना सकते हैं. शानवी के पिता हरीश थपलियाल ने बताया

कि उनके दोनों बच्चों की खेलों में विशेष रुचि है. शानवी कक्षा पांचवीं में अध्ययनरत है और अपने भाई की खेलते देखकर ही उसके मन में भी खेलों के प्रति रुचि बढ़ी। उन्होंने बताया कि वह अपने बच्चों को उनकी प्रतिभा निखारने के लिए पूरा सहयोग और प्रोत्साहन देते हैं. हरीश थपलियाल का कहना है कि बच्चे बचपन से शारीरिक और मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. वह चाहते हैं कि उनके बच्चे मोबाइल फोन से दूर रहकर खेलकूद और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में अधिक समय बिताएं, ताकि वे स्वस्थ रहने के साथ अपनी प्रतिभा को भी निखार सकें. उन्होंने कहा कि खेलों के प्रति लगन और मेहनत के बल पर बच्चे भविष्य में खेल के क्षेत्र में भी अपना करियर बना सकते हैं।

पाकिस्तान टी-20 में अपना दूसरा 100 मीटर स्केटिंग में 12 वर्षीय बच्ची का कमाल

श्रीलंका को 82 रन से हराया, सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त बनाई

करांची (एजेंसी)। पाकिस्तान ने दूसरे टी-20 इंटरनेशनल में श्रीलंका को 82 रन से हरा दिया। इस मैचों की सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल कर ली। श्रीलंकाई टीम घर से बाहर लगातार तीसरी टी-20 सीरीज हारी है। पाकिस्तान ने रविवार को टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 3 विकेट पर 215 रन बनाए। यह टी-20 इंटरनेशनल में पाकिस्तान का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। टीम का सर्वोच्च स्कोर 232/6 है, जो उसने 2021 में इंग्लैंड के खिलाफ बनाया था। जवाब में श्रीलंका की टीम 20 ओवर में 7 विकेट पर 133 रन बना सकी। तेज गेंदबाज मोहम्मद इमरान ने 11 रन देकर 3 विकेट लिए। इससे पहले माज सदकत ने 51 गेंदों पर 96

और कप्तान साहिबजादा फरहान ने 73 रन बनाए। दोनों बल्लेबाजों को कैच छूटने का फायदा मिला। कैच छूटने का पाकिस्तान के बल्लेबाजों ने उठाया फायदा श्रीलंका की खराब फील्डिंग का पाकिस्तान के बल्लेबाजों ने पूरा फायदा उठाया। कप्तान साहिबजादा फरहान जब 11 रन पर थे, तब सिनेथ जयवर्धने ने उनका आसान कैच छोड़ दिया। इससे पहले विनुरा फर्नांडो के ओवर में महेश तीक्ष्णा ने भी उनका मुश्किल कैच टपकाया था। दो जीवनदान मिलने के बाद फरहान ने 5 छक्कों और 4 चौकों की मदद से 73 रन बनाए। 15वें ओवर में दासुन शनाका की गेंद पर महेश तीक्ष्णा ने सीमा रेखा के पास उनका कैच पकड़ा।



मुंबई (महाराष्ट्र) (एजेंसी)। मुंबई की एक बारह साल की बच्ची ने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में जगह बनाई है. अदिति मांजरेकर ने 'इनलाइन स्केट्स बैकवर्ड कैटेगरी' में सबसे तेज 100 मीटर की दूरी तय करके रिकॉर्ड बनाया. उसने यह कारनामा सिर्फ 17.96 सेकंड में कर दिखाया। **कड़ी मेहनत से मिली सफलता** – पूर्वी मुंबई के उपनगर भांडुप में रहने वाले बच्ची के पिता, प्रसाद मांजरेकर ने मीडिया से खास बातचीत में बच्ची की सफलता का श्रेय अपनी बेटी की कड़ी मेहनत और लगन को दिया. उन्होंने कहा कि बच्ची ने रिकॉर्ड बनाने के लिए बहुत मेहनत की और कड़ी ट्रेनिंग ली. उसकी इस उपलब्धि से घर में खुशी का माहौल है. प्रसाद ने ये भी कहा, 'हम भविष्य में स्केटिंग में और भी बड़ी उपलब्धियां हासिल करने के लिए अदिति का हासला बढ़ाते रहेंगे. मैं उसे भारत का



प्रतिनिधित्व करते हुए देखना चाहता हूं।' वहीं अदिति ने कहा कि वह अपने माता-पिता और शिक्षकों के सहयोग से ही यह उपलब्धि हासिल कर पाई है. उसने कहा, 'मैंने जो हासिल किया है,

वह मेरे माता-पिता और शिक्षकों के सहयोग से ही संभव हो पाया है. मैं देश का नाम रोशन करना चाहती हूं. भविष्य में, मैं देश के लिए एकलिना चाहती हूं।' **पिता एक कैफे चलाते हैं** – ये भी उल्लेखनीय है कि अदिति बहुत साधारण परिवार से आती है. उसके पिता एक कैफे चलाते हैं. उसने अपने कैफे के सामने ही एक स्केटिंग कोच से ट्रेनिंग ली. शुरू में उसके माता-पिता को लगा कि वह हार मान लेगी, उन्हें अंदाजा नहीं था कि वह इतनी लगन दिखाएगी और रिकॉर्ड बनाएगी. उसने हर दिन दो से ढाई घंटे प्रैक्टिस की और पिछले तीन सालों में 26 मेट्रल जीती। अदिति ने इस खास लिस्ट में जगह बनाने के लिए कर्नाटक के बेलगाम में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए कोशिश की. प्रसाद ने कहा, 'उस समय हममें से कोई भी उसके साथ नहीं था. रिकॉर्ड बनाने में उसने जो दृढ़ संकल्प दिखाया, उस पर हमें सचमुच गर्व है।

